मित्रता के मोती

डॉ. प्रीति समकित सुराना

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मित्रता के मोती

डॉ. प्रीति समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश (481331)

Antra Shabdshakti Prakeshan

संपादक- प्रीति समकित सुराना

आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

मोबाईल- 9009423393

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2025, डॉ. प्रीति समकित सुराना

मूल्य- 200.00 रूपये

मुद्रक- सोनी कम्प्युटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY Dr. PRITI SAMKIT SURANA

वैधानिक चेतावनीः इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनप्ररयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

समर्पण

यह संग्रह उन सभी को समर्पित है,
जो मेरे जीवन में मित्रता की मिसाल बने,
जिन्होंने रिश्तों की जड़ों को
अपनेपन, विश्वास और स्नेह से सींचा।

भूमिका

रिश्तों की डोर तब और मजबूत हो जाती है, जब उसके धागों में मित्रता की गाँठ बँधी हो। मित्रता वह आधार है, जिस पर हर संबंध सहजता से टिक जाता है। जहाँ मन की बातें बिना झिझक कही जा सकें, जहाँ मौन भी समझा जा सके, वहीं रिश्ते का निभाना आसान हो जाता है।

मित्रता उम्र, दूरी या औपचारिकताओं की मोहताज नहीं होती। यह एक ऐसा अनकहा वादा है, जिसमें हम एक-दूसरे के सुख-दुख में बिना किसी शर्त के साथ खड़े रहते हैं। चाहे वह पारिवारिक रिश्ता हो, वैवाहिक बंधन, या जीवन में बने नए परिचय - यदि उसकी जड़ें मित्रता की मिट्टी में हों, तो वह समय के हर तूफ़ान में भी हरा-भरा रहता है।

इसी सोच के साथ, यह संकलन उन भावनाओं को शब्द देता है, जो मैंने अपने जीवन के अनमोल रिश्तों के लिए लिखीं है, जिनमें हर पंक्ति में मित्रता की गर्माहट और अपनापन बसा है।

"मित्रता वह छाया है,
जो धूप में ठंडक और अंधेरे में रास्ता देती है।"

— डॉ. प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	मेरे गुरु, मेरे मित्र	**7-8**
2.	मम्मी–पापा मेरे प्रथम मित्र	**9-10**
3.	मेरा पति, मेरा देवता नहीं... दोस्त	**11-12**
4.	मेरे बच्चे — मेरी साँसों के सखा	**13-15**
5.	मित्रता की साँसें- पूजा	**16-17**
6.	हम दोस्त भी, परिवार भी	**18-19**
7.	डॉ चाची – मेरी सखी, मेरी सहारा	**20-21**
8.	रिश्तों की उषा	**22-23**
9.	"बिगड़े बच्चे – दिल से प्यारे"	**24-25**
10.	हम… और हमारी बुनावट	**26-27**
11.	"सपनों की सीढ़ियाँ… और तुम सब"	**28-31**
12.	मित्रता का सार – अनकहे वादों की कहानी	**32**

मेरे गुरु, मेरे मित्र

आपके चरणों में बैठते ही…
मन को एक ऐसी शांति मिलती है,
जैसे कोई भटकता राही
अपने घर की चौखट पहचान गया हो।

गुरु…
यह शब्द वर्षों से सुनती आई थी,
पर जब आपने मेरी आत्मा को छुआ,
तब समझ में आया कि
गुरु केवल ज्ञान का स्रोत नहीं होते —
वो तो आत्मा का आलोक हैं।

आप मेरे गुरु हैं —
पर साथ ही…
आप मेरे मित्र भी हैं।
ऐसे मित्र, जिनसे मैं सब कुछ कह सकती हूँ —
बिना झिझक, बिना संकोच, बिना परख के डर के।
जो मेरी हर हार में मेरे पास बैठते हैं,
मेरी हर जीत में मुझसे ज़्यादा मुस्कुराते हैं।
जिनकी मुस्कान में भरोसा है
और मौन में भी उत्तर।

आपने कभी ऊँचाई से नहीं देखा,
बल्कि मेरी ज़मीन पर आकर
मेरे साथ खड़े हो गए।

जब मैं डगमगाई, आपने सहारा नहीं दिया,
बल्कि मेरे भीतर खड़ा कर दिया
मेरा ही आत्मबल।

आपकी डाँट में भी स्नेह है,
और आपकी प्रशंसा में भी संयम।
आपने मुझे राह नहीं दी,
राह देखने की दृष्टि दी।

गुरु होना एक तप है,
और मित्र होना एक हृदय का विस्तार —
आपने दोनों को निभाया,
सहजता से, समर्पण से।

आपके सान्निध्य ने
मुझे मुझसे मिलवाया,
और अब जब कभी मैं
ख़ुद से दूर हो जाती हूँ,
आपकी बातें, आपकी दृष्टि
फिर से मुझे राह दिखा देती हैं।

आप मेरे पथ के दीप भी हैं,
और मेरे मन, वचन और कर्मों के साक्षी भी।
आपमें मुझे एक ऐसा मित्र मिला
जो मेरा गुरु बनकर
मुझे परमात्मा बनने का मार्ग बता दे।

मम्मी–पापा मेरे प्रथम मित्र

जीवन की पहली आहट में
जब मैंने आँखें खोलीं,
स्नेहिल उँगलियों का सहारा थामा,
चलना सीखा—
और पाया,
माँ–पापा ही मेरे पहले साथी हैं।

बचपन की खिलखिलाहट में
माँ की गोदी सबसे सुरक्षित ठिकाना बनी,
पापा के कंधे पर बैठकर
दुनिया की ऊँचाइयों को छूने का
पहला विश्वास मिला।

स्कूल की किताबों में
जब अक्षर बिखरे,
माँ ने शब्दों को अर्थ दिए,
पापा ने सपनों को दिशा दी।
उनकी बातें—
कभी आदेश नहीं लगीं,
कभी बंधन नहीं लगीं,
बल्कि मित्रता की वह डोर बनीं,
जो हर कदम समझाती चली गई।

हर गलती पर
उन्होंने दंड नहीं दिया,
बल्कि मित्र बनकर समझाया।

हर उपलब्धि पर
माता–पिता से बढ़कर,
सच्चे मित्र की तरह
गर्व से गले लगाया।

आज भी जब जीवन की भीड़ में
किसी सच्चे साथी की तलाश होती है,
तो मन कह उठता है—
मित्रता की पहली परिभाषा
तो घर की चौखट पर ही सीखी थी।

माँ की नज़रों में
मैं आज भी वही मासूम बच्ची हूँ,
पापा के दिल में
आज भी वही जिज्ञासु बालिका।
मेरे हर प्रश्न, हर जिज्ञासा
उनके उत्तरों में
आज भी सुकून पाती है।

सच है—
मम्मी–पापा सिर्फ़ माता–पिता नहीं,
बल्कि मेरे प्रथम मित्र हैं,
जिन्होंने मेरे जीवन को
प्रेम, आस्था और विश्वास की
अनमोल रोशनी से सजाया है

मेरा पति, मेरा देवता नहीं... दोस्त

मैंने कभी उसे
सिर झुकाकर नहीं देखा -
और न ही उसने मुझे
नीचे झुककर जीने दिया।

हमारे बीच कोई 'पूजा' नहीं थी,
न ही कोई 'श्रद्धा से चुप्पी ओढ़े हुए रिश्ते'।
हाँ, एक सहज मुस्कराहट थी,
एक खुली बातचीत थी,
जो रिश्ते को बोझ नहीं -
सहचर्य बनाती रही।

मैंने उसे देवता नहीं माना,
क्योंकि वह **pedestal** पर नहीं,
बिलकुल मेरे पास...
मेरे बराबर चलता रहा।

वो मेरा पति है -
पर उससे भी पहले,
वो मेरा दोस्त है।
जो मेरी चुप्पियों को पढ़ता है,
मेरी आँखों की कोर पर रुके सवालों को
बिना बोले सुलझा देता है।

वो मुझे कभी बदलने नहीं चला,
बस साथ रहते-रहते
मैं ख़ुद को और बेहतर बनाने लगी।

हमने एक-दूसरे को
श्रृंगार या दायित्व की दृष्टि से नहीं,

बल्कि एक-दूसरे की आँखों में
अपने स्वप्नों की छवि खोजते हुए देखा।

कभी मैं हार गई,
तो उसने जश्न नहीं मनाया -
बल्कि मेरी हथेली थामकर कहा,
“चल, अगली बार साथ जीतेंगे।”

वो मुझे थाली में परोसी हुई प्रसन्नता नहीं देता,
बल्कि जीवन की उलझनों में
मेरे साथ बैठकर उन्हें सुलझाता है।

वो कोई चमत्कारी पुरुष नहीं है,
न ही मैं कोई आदर्श स्त्री।
हम दोनों -
बस इंसान हैं, साथी हैं,
जो एक-दूसरे के सच को
सुनते, समझते और सँभालते हैं।

शायद इसीलिए…
आज भी, बरसों बाद भी,
जब वो मुझे देखता है,
तो मेरी आँखों में
कोई देवत्व नहीं -
बस एक गहरा अपनापन उभर आता है।

क्योंकि…
मेरा पति, मेरा देवता नहीं... दोस्त है।

मेरे बच्चे - मेरी साँसों के सखा

लोग कहते हैं -
बच्चे बड़े होकर माँ से दूर हो जाते हैं,
पर मैं गवाही दे सकती हूँ...
कि मेरे बच्चे
बड़े तो ज़रूर हुए हैं,
पर मुझसे कभी दूर नहीं हुए।

तन्मय... मेरा पहला विश्वास।
जिसने मेरा हर 'पहला डर'
अपने सहज व्यवहार से
अपने ऊपर ले लिया।
जो आज एक चार्टर्ड अकाउंटेंट है,
पर मेरे लिए आज भी
वो वही है -
जो मेरे थके चेहरे को
एक नज़र में पढ़ लेता है,
और बिना कहे मुस्कान दे जाता है।

जयति और जैनम,
मेरे जुड़वाँ चमत्कार,
जिन्होंने मेरे जीवन को
दुगुनी ऊर्जा, दुगुनी खुशी,
और दुगुने प्यार से भर दिया।
ये दोनों मेरे साथ
माँ-बच्चे का नहीं,

सखी-सखा का रिश्ता जीते हैं।

जयति...
जो मेरे भीतर की नारी को समझती है,
मेरे ख्वाबों को उड़ान देती है,
और जब मैं थक जाऊँ,
तो मुझे अपनी आँखों से
फिर से देखना सिखाती है।

जैनम सर...
जो कभी शब्दों में नहीं,
पर अपने मौन में मुझे समझता है।
जिसका स्नेह
कभी लाड़ में, कभी जिम्मेदारी में
इस तरह उतरता है
कि मैं खुद को हर बार
पूर्ण महसूस करती हूँ।

ये तीनों मेरे बच्चे हैं,
पर केवल खून के रिश्ते नहीं हैं -
ये मेरे मन के रक्षक हैं,
मेरे आत्मविश्वास के साथी,
मेरे हँसी के हिस्सेदार,
और मेरी खामोशियों के हमराज़।

कभी मैं माँ बनती हूँ,
तो ये मेरे मित्र हो जाते हैं।
कभी मैं टूटी-सी होती हूँ,

तो ये मेरा सम्बल बन जाते हैं।

लोग पूछते हैं -
इतनी ऊर्जा, इतनी मुस्कान कहाँ से लाती हो?
मैं कहती हूँ -
मेरे बच्चे हैं ना...
बिना कहे, बिना शोर किए
मुझे हर दिन नया कर जाते हैं।

इनके बिना मैं अधूरी नहीं,
शायद अस्तित्वहीन होती।
क्योंकि ये तीनों
मेरे जीवन का पूर्ण वाक्य हैं -
जिसे मैं हर दिन नए अर्थों में जीती हूँ।

मित्रता की साँसें

प्रिय पूजा,

हम दो जिस्म…
पर एक आत्मीय स्पर्श की छाया।
हमारी उम्र पचास के करीब पहुँच रही है,
पर हमारी दोस्ती—हमारी उम्र से बड़ी, दुनिया से परे।
छोटी-छोटी बातों से शुरू हुआ यह बंधन,
सच पूछो तो, बचपन की हर दोपहर की तरह
साधारण होते हुए भी…
खास था।

पल-पल का साझा हुआ करता था—
पापा के घर से लेकर सपनों के शहर तक।
फिर शादी ने दस्तक दी,
फिर ज़िम्मेदारियाँ छत की तरह सिर पर आ गईं,
और दूरियाँ…
हथेली की लकीरों-सी बढ़ती चली गईं।

पर आज भी-
तू किसी और शहर में होती है,
और मेरी धड़कनों में बसती है।
हर दिन हम याद करते हैं एक-दूजे को
जैसे सूरज याद करता है सुबह को।
अब हर बात साझा नहीं होती…
क्योंकि अब हमारे आँसू हमारे शब्दों से न टपकें,

ये मैं जानती हूँ।
पास होती,
तो एक आलिंगन में सब कुछ कह जाती…
पर दूरी में सिर्फ मौन को भेजती हूँ-
जिसे तू पढ़ लेती है।

हम सालों में मिलते हैं,
पर मोबाइल की स्क्रीन
हमारी आत्माओं को जोड़े रखती है।
अब भी तू मेरी आवाज़ में कंपन महसूस करती है,
अब भी मैं तेरी हँसी में थकान पहचान लेती हूँ।

पचास की उम्र में,
ये 48 साल की मित्रता
मेरा सबसे सुंदर चुनाव है-
न रक्त का रिश्ता,
न समाज की परिभाषा में बंधा,
बस एक आत्मा का दूसरी आत्मा से संवाद।

तू मेरी पसंद है…
और अंतिम साँस तक रहेगी…
मेरी साँसों से जुड़ी हुई।

तुझे मित्रता दिवस की कोमलतम बधाई।
तू आज भी मेरी दोस्त है - जैसे कल थी, जैसे सदा रहेगी।

तुझे ढेर सारा प्यार

हम दोस्त भी, परिवार भी

प्रिय नितिन भैय्या और सीमा भाभी,

कौन कहता है
कि आप मेरे जेठ-जेठानी हैं?
रिश्तों की परिभाषाएँ
कब से इतनी सीमित हो गईं?

आप तो वो हैं
जिनसे मैं लड़ती रही वर्षों से,
हर छोटी-बड़ी बात पर -
बिना तलवार,
बिना ढाल,
सिर्फ मुस्कानों और तकरारों की नोंक पर।

हमारा रिश्ता
ना रसोई की देहरी में रुका,
ना ही पड़ोस की दीवारों में सिमटा।
हमने बाँटी हैं
जिम्मेदारियाँ,
सपनों के बोझ,
अपनों की परवाह,
और कभी-कभी वो खामोशियाँ भी
जो केवल अपनापन समझता है।

भावनाओं में बहे,
अनुभवों में ढले,
और बच्चों की परवरिश में
एक-दूसरे के आईने बन गए हम।

हम दोस्त बनते गए -
कभी चुप्पियों के मध्य,

कभी हँसी के फव्वारों में,
कभी बहस की उस गर्माहट में
जिसमें भी प्यार ही था।

और अब...
हम साथ नहीं,
एक-दूसरे के भीतर रहते हैं।
पोते-पोतियों के दादा-दादी बनकर
रिश्ते को समय से आगे पहुँचा दिया हमने।

हम परिवार ही नहीं,
सहेजे हुए पन्ने हैं
अगली पीढ़ियों की पुस्तक में।

पर एक बात,
अब भी वही है -
लड़ने का हक मेरा ज्यादा रहेगा!
क्योंकि प्यार जताने का
मेरा तरीका बदला नहीं,
थोड़ा उलाहना,
थोड़ा अधिकार,
बहुत सारा अपनापन।

इस दोस्ती दिवस पर,
मेरी इस नोंक-झोंक वाली दोस्ती को
ढेर सारी शुभकामनाएँ।

हमेशा साथ रहिए -
बातों में उलझते हुए,
पर दिल से जुड़े हुए।

लव यू सो मच।

डॉ चाची – मेरी सखी, मेरी सहारा

हाँ, ये सच है...
मैं आपकी बहू भी हूँ,
और कभी-कभी पेशेंट भी।
पर आप...
सिर्फ दवाओं से नहीं,
मन के शब्दों से भी इलाज करने वाली डॉक्टर हैं।

जब मैं इस घर में बहू बनकर आई,
तब कहाँ जानती थी कि
गले में स्टेथोस्कोप लगाए,
मुझे चेक करती एक डॉ चाची
मेरे जीवन की सबसे बड़ी दोस्त बन जाएँगी।

आपने कभी मुझे बदला नहीं,
बस मेरी मौलिकता को अपनाया।
जैसी मैं हूँ,
उसी रूप में मुझे प्यार किया, समझा,
और बिना शर्त स्वीकार किया।

डॉ चाची,
आपने मुझे सिखाया कि—
अगर संबंध दोस्ती की बुनियाद पर टिकें,
तो रिश्ते बोझ नहीं होते,
बल्कि आशीर्वाद बन जाते हैं।

आप दादी सास भी हैं-

इस नाते कभी डाँट भी पड़ी,
पर वही डाँट कठिन समय में
संजीवनी बनकर मिली।
गलतियों पर टोकने का हक़ भी आपका,
और गिरते वक़्त थाम लेने का हौसला भी आप ही में।

अब तो हम
हर सुख-दुख साझा करते हैं।
अगर एक दिन भी न मिलें,
तो दिल बेचैन हो जाता है।
हमारी दोस्ती-यारी को
शब्दों में बाँध पाना आसान नहीं-
क्योंकि ये रिश्ता,
रिश्तों से परे है।

लोग समझें या नहीं…
पर जो सच्ची दोस्ती को समझते हैं,
वो जान लेंगे कि
एक डॉक्टर और बहू के बीच
इतनी गहराई भी हो सकती है।

आज…
आपके लिए बस इतना ही कहना है—
लव यू डॉ चाची।
आपके बिना मेरी कहानी अधूरी है।

हैप्पी फ्रेंडशिप डे!

रिश्तों की उषा

प्रिय उषा,
जब मैं इस नए आँगन में आई,
तो पिछला आँगन मन के कोने में कहीं ठहर गया।
नई हवाओं में साँस लेते हुए
कुछ रिश्ते अपरिचित थे, कुछ औपचारिक,
पर एक रिश्ता था...
जो जैसे मेरे भीतर की ही कोई धड़कन बनकर
धीरे-धीरे मेरे नए जीवन में उतर आया -
वो तुम थी, उषा।

तुम, जो अपने नाम की तरह
मेरे इस नए जीवन की पहली उजास बनी।
जिसने बिना कहे,
बिना जताए,
मेरे हर असमंजस को अपनाया,
और कहा -
"चिन्ता मत कर, मैं हूँ न!"

सिर्फ़ दो महीने का ही तो अंतर था हमारी शादियों में,
पर हमारे बीच जो भावों का रिश्ता बंधा -
वो वक्त से, शब्दों से,
यहाँ तक कि खून के रिश्तों से भी परे था।

हमारे पतियों की दोस्ती बचपन से रही,
पर हम...

हमने तो उस दोस्ती को
समझ, संवेदना, और सहचरी के
नए रंगों में ढाला।

हम दोस्त हैं, हमराज़ हैं,
और उससे भी बढ़कर —
एक-दूसरे की अदृश्य पर सशक्त छाया,
जो हर मोड़ पर यह कहती रही -
"तू निडर चल, मैं तेरे पीछे हूँ,
तेरे साथ नहीं - तेरे विश्वास में हूँ।"

28 साल लंबा सफ़र...
कभी मुस्कानों की ताशीर में,
कभी खामोशियों की रसोई में,
हमने जो पनपाया है,
वो सिर्फ़ 'दोस्ती' नहीं -
वो एक जीवन दृष्टि है।

इस रिश्ते को
कोई परिभाषा, कोई श्रेणी,
नहीं बाँध सकती।

बस इतना चाहती हूँ —
हर दिन की पहली रौशनी बनकर
तू मेरे जीवन को यूँ ही
उजास देती रहना...

हैप्पी फ्रेंडशिप डे---- लव यू, प्रिय उषा

"बिगड़े बच्चे – दिल से प्यारे"

कभी किसी ने कहा था -
"बिगड़े बच्चे सँभल जाएँ, तो संसार सँवर जाए।"
पर मैं कहती हूँ -
"इन बिगड़े बच्चों के बिना, हमारा संसार अधूरा है!"

ये वो बच्चे हैं,
जो 'शरारत' को भी सलीका मानते हैं,
जो नियमों को नहीं, लेकिन रिश्तों को जरूर निभाते हैं।
कभी रातभर चलने वाले चुटकुलों से घर गूंजा करते हैं,
तो कभी बिना कहे ही स्क्रीन पर मुस्कान बिखेरते हैं।

जैनम की किसी बात पर जयति खिलखिलाती है,
तन्मय चुपचाप सबका निरीक्षण करता है - सीए वाला दिमाग जो है!
कजिन्स की टोली में कोई "बड़े भैया" बना बैठा है,
तो कोई "छोटू" होकर भी सब पर राज करता है।

"मम्मी की डाँट" का जवाब
इनके पास हमेशा "मीम" के ज़रिए आता है।
"पढ़ाई" के नाम पर मोबाइल की स्क्रीन टिमटिमाती है,
और घर के कोनों में हँसी की गूंज धीमे-धीमे फैल जाती है।

ये बच्चे, जिनसे घर की दीवारें जिन्दा हैं,
जो हमारी नींद चुराकर
खुद सपनों की दुनिया सजाते हैं।
कभी 'बिगड़े' कहलाकर हँसी उड़वाते हैं,
तो कभी सबसे प्यारे बनकर दिल जीत जाते हैं।

ये वही हैं -
जो आज दोस्त हैं, कल भाई-बहन,
फिर सहपाठी, फिर ट्रेवल बडीज़ -
और ज़िन्दगी की सबसे मज़ेदार ग्रुपचैट!

इनके बिना घर, घर नहीं लगता।
इनके बिना त्योहारों में रंग नहीं आता।
इनके झगड़े भी मिठास से भरे होते हैं,
और इनके 'सॉरी' इतने मासूम होते हैं कि मन पिघल जाता है।

तो आज -
इस "बिगड़े बच्चे ग्रुप" को हैप्पी फ्रेंड्स डे
और मेरा
सबसे सच्चा आशीर्वाद और सबसे मीठा प्यार।
बिगड़े रहो...
क्योंकि इसी बिगड़ने में छुपा है
तुम्हारी मासूमियत का, दोस्ती का, और जीवन की खुशी का सार।

"हम... और हमारी बुनावट"

मित्रता... एक भाव है, जो ना उम्र देखती है, ना स्थान,
ना रक्त के रिश्ते मांगती है,
ना ही किसी औपचारिक पहचान की मोहताज होती है।
यह दिल से निकलती है, आत्मा से जुड़ती है -
और तब, एक सोशल मीडिया समूह भी घर जैसा लगने लगता है।

मेरा सोशल मीडिया परिवार -
जहाँ शब्दों से रिश्ता नहीं, आत्मीयता से नाता जुड़ा है।

मुकेश भैय्या, आपकी कहानियों में जैसे हम सबकी साँसें बसती हैं,
सपना भाभी, आपकी सहजता जैसे जीवन की सादगी का उदाहरण हो।
गुलशन और साक्षी, आप दोनों के बीच की समझदारी और आत्मीयता
हर संवाद को संपूर्णता देती है।

मोहिनी और निखिल जी -
आपके सान्निध्य में मित्रता सिर्फ मज़बूत नहीं होती,
वह निखरती है, खिलती है, गहराती है।

शैलेश भैय्या —
बड़े भाई के रूप में उनकी उपस्थिति एक सहज सुरक्षा-घेरा बनाती है।

और… पवन अरोरा -
आप इस जीवन के दृश्य से भले ओझल हो गए,
पर भावनाओं की रेखाओं में अब भी मौजूद हो।
आपका साथ, आपकी मुस्कान, हर स्मृति में जीवंत है।

दिव्या भाभी, आप… उस भावुक ऊर्जा का केंद्र हैं,
जिससे हम जुड़ते हैं, सहेजते हैं, और खुद को बेहतर महसूस करते हैं।

हम हर साल,
किसी एक के घर मिलते हैं -
कभी चाय की प्यालियों के बीच,
कभी हँसी के झोंकों में,
कभी उन मौन क्षणों में,
जहाँ सिर्फ आँखें बोलती हैं।

विश्व पुस्तक मेला, दिल्ली -
जहाँ हम किताबों के बहाने जुड़े थे,
पर साथ-साथ, एक ऐसी किताब बन गए हैं,
जिसके हर पृष्ठ पर आत्मीयता की स्याही से लिखा गया है —
"हम साथ हैं…"

आज मित्रता दिवस है,
पर हममें वो सौभाग्य है कि हमारी हर बातचीत,
हर मुलाक़ात, हर साझा पल -
मित्रता का उत्सव बन जाता है।

आप सभी को दिल की गहराइयों से
स्नेह, कृतज्ञता और ढेरों शुभकामनाएँ।
आप हो…
तो शब्दों के बिना भी बहुत कुछ कहा जा सकता है।

"सपनों की सीढ़ियाँ... और तुम सब"

2016 की एक दोपहर-
जब शब्द मेरे भीतर गूंज रहे थे
और समकित की नज़रों में मेरी कल्पनाएँ आकार ले रही थीं,
तभी जन्म लिया -
'अन्तरा शब्दशक्ति' ने।
एक सपना...
जो सिर्फ मेरा नहीं था -
वो हम दोनों की साँझी कल्पना थी,
जिसमें शब्दों से संसार बनाना था,
और सपनों से साहित्य।

पर एक सपना अकेले कहाँ सँवरता है?

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई - जिनकी सोच में दिशा है,
ब्रजेश शर्मा जी - जिनके अनुभवों में विस्तार है,
डॉ. चाची - जिनके स्नेहिल संरक्षण में
हर मोड़ आसान हो गया...
वे हमारे संरक्षक नहीं, हमारे विश्वास के स्तंभ हैं।

कीर्ति
तुम सिर्फ संस्था की महामंत्री नहीं,
मेरे लिए एक दृढ़ विचार, एक सशक्त सलाहकार और
एक आत्मीय सखी हो -
जो हर निर्णय से पहले,
मन की गिरहें खोल देती है।

समकित
तुम सिर्फ मेरे जीवनसाथी नहीं,
मेरे हर सपने की आर्थिक नींव हो।
'संभव है!'
तुम्हारे कहे इन दो शब्दों ने
सैकड़ों असंभव काम संभव कर दिखाए।

पिंकी जी
आपके अनुभव और विचारों की छाया में
अन्तरा शब्दशक्ति और मैं दोनों फलते-फूलते हैं।
उपाध्यक्ष का पद, आपके संबल के सामने छोटा लगता है।
आप हैं - तो मैं सहज हूँ, सशक्त हूँ।

अदिति भाभी
जिनके मायके और ससुराल दोनों मेरे जैसे ही हैं -
लेकिन जो 'मेरे साथ' की परिभाषा को
हर रोज़ नई ऊर्जा देती हैं।
संस्था की कर्मठ योद्धा -
जो शब्दों से नहीं, कर्म से संस्था की आत्मा हैं।

संदीप सोनी जी
तकनीकी संपादन और सलाह में
आपने हमें वो पंख दिए,
जिनसे हमनें न सिर्फ उड़ान भरी,
बल्कि 7 विश्व रिकॉर्ड और
असंख्य सम्मान अर्जित किए।

पूजा और लीना जी
आप दोनों जैसे साहित्य की खेती में
संवेदनाओं के बीज बोती हैं,
रचनाकारों को दिशा देती हैं —
विषय चुनती नहीं,
साहित्य की लय पहचानती हैं।

ऋतु भाभी, सुन्नु, सरफराज और संजय भैरय्या
आप सब…
शब्द नहीं बोलते,
पर हर बार साथ खड़े होते हैं,
जब-जब हमारी संस्था को एक सच्चे संबल की ज़रूरत होती है।

आप सब वो परिवार हैं,
जिसने मुझे सिर्फ लेखिका नहीं रहने दिया -
मुझे संपादक, प्रकाशक, मंच संचालक, और
प्रेरक बनाया।
मेरे सपनों को आकार दिया,
मेरे उद्देश्य को अर्थ दिया,
और उस राह पर साथ चलने का साहस भी।

एक छोटे से कस्बे वारासिवनी से
700 से भी अधिक पुस्तकों का प्रकाशन -
कोरा आँकड़ा नहीं,
हम सबकी संयुक्त साधना का प्रमाण है।

आज मित्रता दिवस है
तो एक औपचारिक शुभकामना देने का दिन नहीं,

बल्कि उस रिश्ते को प्रणाम करने का क्षण है
जिसमें आप सबने मेरे जीवन को
एक सार्थक साहित्यिक यात्रा में बदल दिया।

आप सभी को
मन की गहराइयों से
स्नेह, आभार और अनगिनत शुभकामनाएँ।
आप सब हो…
तो शब्द भी संबल बन जाते हैं।

अन्तरा शब्दशक्ति परिवार को ढेर सारा प्यार

मित्रता का सार – अनकहे वादों की कहानी

मित्रता…
एक ऐसा रिश्ता, जिसे परिभाषाओं की ज़रूरत नहीं।
यह न तो जन्म का बंधन है,
न ही किसी काग़ज़ पर दर्ज समझौता।
यह तो बस मन से मन तक फैली
एक अदृश्य डोर है…
जिसे पकड़कर हम हर मुश्किल पार कर जाते हैं।

मित्र वह है,
जो हमारी चुप्पी में भी संवाद ढूँढ ले,
हमारे आँसुओं में भी मुस्कान की वजह तलाश ले,
और हमारे हारे हुए दिनों में भी
विश्वास की लौ जला दे।

रिश्ते निभाने की कला में,
मित्रता सबसे सुंदर रंग भरती है।
यह अहंकार को पिघला देती है,
औपचारिकताओं को किनारे कर देती है,
और हर बंधन को जीने लायक बना देती है।

शायद यही कारण है कि
जीवन में चाहे कितने भी रिश्ते हों,
अगर उनकी जड़ों में मित्रता हो,
तो वे कभी सूखते नहीं…
बल्कि हर मौसम में
नई पत्तियाँ, नई खुशबू, और नया विश्वास देते हैं।

★परिचय★

संस्थापक
अन्तरा शब्दशक्ति संस्था एवं प्रकाशन

नाम - डॉ. प्रीति समकित सुराना
स्वतंत्र लेखिका, प्रकाशक,
टैरो-न्यूमरोल जिस्ट, हीलर,
काउंसिलर, रेकी ग्रैंड मास्टर।

शिक्षा - पी.एचडी. (समाज शास्त्र)

कार्यक्षेत्र - व्यवसाय एवं प्रकाशन

सामाजिक क्षेत्र - गौ सेवा, समाज सेवा एवं साहित्य सेवा।

ईमेल - pritisamkit@gmail.com, antrashabdshakti@gmail.com

ब्लॉग - priti-deshlahra.blogspot.com (मेरा मन)

वेबसाइट - antrashabdshakti.com, pritisamkit.com

मो. नं.- **9009423393**

कार्यरत संस्था- अन्तरा शब्दशक्ति संस्था पंजीयन क्रमांक (**04/21/05/207665/19**)

प्रकाशित किताबें- पी.एचडी. थीसिस (समाज शास्त्र), मन की बात (कविता संग्रह), मेरा मन (कविता संग्रह), दृष्टिकोण (आलेख संग्रह), कतरा-कतरा मेरा मन (कथा संग्रह), काश!कभी सोचा होता.. (व्यंग्य काव्य संग्रह), गद्य लेखन का महत्व (आलेख पुस्तिका), विचार क्रांति (हिन्दी पर विशेष विचार संकलन), जोगराज जी का वंशवृक्ष (परिवार परिचय), कर्म इक्कीसा (धार्मिक पुस्तिका), अन्तरा शब्दशक्ति (संस्था परिचय), सुनो! (मेरे मन की बात,..), छोटी-छोटी बातें (टेबिल कैलेंडर), आपातकाल मे सृजन फुलवारी, प्रीत के गीत, सृष्टि मेरे आँचल में,.!, संभवनाथ परिवार (डायरेक्टरी एवं प्रेरक मुक्तक), गुजराती अनुवाद- काश! कभी सोचा होता,..(गुजराती अनुवादक-रक्षित दवे 'मौन'),

500 से अधिक पुस्तकों का संपादन, 100 से अधिक साझा संग्रह में रचनाएँ शामिल, 5 विश्व रिकार्ड (2 इंडिया बुक ऑफ रिकार्ड्स/1 एशिया बुक ऑफ रिकार्ड्स/1 लन्दन बुक ऑफ रिकार्ड्स/1 ओएमजी ऑफ रिकार्ड्स) एवं कनाडा, नेपाल एवं भारत में 100 से अधिक सम्मान प्राप्त।